NEERAJ®

M.H.D. -3

उपन्यास एवं कहानी

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Dr. Shanti Swaroop Gupt,* **M.A. (Hindi), Ph.D**

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office:

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878
E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

MRP ₹ **380/-**

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

© Copyright Reserved with the Publishers only.

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

Disclaimer/T&C

1. *For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.*
3. *These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.*
4. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
5. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
6. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms – Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like – Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
7. *The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*
8. *All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.*
9. *All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.*

Get books by Post & Pay Cash on Delivery :

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

Content

उपन्यास एवं कहानी

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—June, 2023 (Solved) 1

Question Paper—December, 2022 (Solved) 1-2

Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2

Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-2

Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1

Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-2

Question Paper—December, 2018 (Solved) 1

Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-2

Question Paper—December, 2017 (Solved) 1-2

Question Paper—June, 2017 (Solved) 1-3

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. गोदान ❐ प्रेमचन्द 1

2. धरती धन न अपना ❐ जगदीशचन्द्र 51

3. सूखा बरगद ❐ मंजूर एहतेशाम 64

4. मैला आँचल ❐ फणीश्वरनाथ 'रेणु' 90

5. बाणभट्ट की आत्मकथा ❐ हजारी प्रसाद द्विवेदी 118

6. कहानी 157

7. नई कहानी 178

8. समकालीन कहानी 203

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

उपन्यास एवं कहानी

M.H.D.-3

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. 'गोदान' में चित्रित ग्रामीण पात्रों की विशेषताएं बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-17, प्रश्न 7

प्रश्न 2. 'धरती धन न अपना' में अभिव्यक्त दलित जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-51, प्रश्न 1

प्रश्न 3. 'सूखा बरगद' में चित्रित मध्यवर्गीय नारी की विविध छवियों को विश्लेषित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-71-72, प्रश्न 5

प्रश्न 4. आंचलिक उपन्यास की विशिष्टताओं की कसौटी पर 'मैला आँचल' का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-93, प्रश्न 3

प्रश्न 5. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' के संरचना-शिल्प पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-134, प्रश्न 8

प्रश्न 6. 'पाजेब' कहानी का कथ्य बताते हुए उसके शिल्प पक्ष पर विचार कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-171, प्रश्न 9

प्रश्न 7. 'पिता' कहानी में अभिव्यक्त पारिवारिक संबंधों के बदलते स्वरूप को विश्लेषित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-206, प्रश्न 3

प्रश्न 8. 'त्रिशंकु' कहानी के आधार पर मन्नू भण्डारी की नारी दृष्टि का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-213, प्रश्न 7

प्रश्न 9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियां लिखिए–

(क) 'पुरस्कार' का शिल्प पक्ष

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-163, प्रश्न 5

(ख) 'काली' का चरित्र

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-60, प्रश्न 6

(ग) 'कुत्ते की पूँछ' की भाषा

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-167-169, प्रश्न 7

(घ) 'एक दिन का मेहमान' में युगीन यथार्थ

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-188-189, प्रश्न 7

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2022

(Solved)

उपन्यास एवं कहानी

M.H.D.-3

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. किसान जीवन के परिप्रेक्ष्य में 'गोदान' का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-11, प्रश्न 4

प्रश्न 2. 'सूखा बरगद' में अभिव्यक्त मध्यवर्गीय नारी के बदलते स्वरूप का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-71-72, प्रश्न 5

प्रश्न 3. 'मेला आँचल' के आधार पर उपन्यास की राजनीतिक चेतना को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-94, 'अंचल की राजनीतिक तथा आर्थिक स्थिति', पृष्ठ-95, 'जनजागरण के संकेत', 'राजनीतिक चेतना'

प्रश्न 4. 'पाजेब' कहानी की अंतर्वस्तु स्पष्ट करते हुए कहानी में निहित मध्यवर्गीय मानसिकता का विवेचन कीजिए।

उत्तर–भारत में स्वतंत्रता के बाद मध्यवर्ग अस्तित्व में आया। यह मध्यवर्ग वह शिक्षित वर्ग था, जो अमीर और गरीब के बीच की स्थिति रखता था और अधिकांशतः नौकरीपेशा था। मध्यवर्ग गरीब तबके से खुद को श्रेष्ठ दिखाने और अमीरों के समकक्ष दिखने की होड़ में झूठी नैतिकता, आदर्शवाद और दिखावे की प्रवृत्ति में फंसता गया। मध्यवर्ग की अधिकांशतः यही प्रवृत्ति रही है। इस मध्यवर्ग की एक कमजोरी यह है कि जैसे ही कोई कठिन परिस्थिति आती है, यह सारी नैतिकता और आदर्श भूलकर ओछेपन पर उतर आता है।

'पाजेब' कहानी बाल-मनोविज्ञान पर आधारित कहानी है। इसमें भी मध्यवर्गीय परिवार है, परन्तु यह परिवार पारिवारिक संबंधों में मधुरता रखने वाला मध्यवर्ग है। मुन्नी की बुआ बच्चों से प्रेम करने वाली है। मध्यवर्ग की मानसिकता संदेह करने वाली, लड़के-लड़की में भेद करने वाली होती है, जिसे आधुनिकता की आड़ में ढककर रखने की कोशिश की जाती है। आशुतोष द्वारा जिद करने पर उसकी लड़कियों से तुलना कर लड़कियों को हीन बताने और आशुतोष के माता-पिता द्वारा पाजेब खोने पर नौकर बंसी पर शक करने में उजागर होता है। मध्यवर्ग की एक प्रवृत्ति होती है–दुविधा में फंसे रहने की। वह जिस पर भरोसा करता है, उस पर भी संदेह करता है, विशेषकर नौकरों पर और बंसी पर भरोसा होने के बाद भी उस पर संदेह कर ऊहापोह की स्थिति में फंसे रहना उसकी इसी मानसिकता को दर्शाता है।

मध्यवर्ग अपने स्वार्थ के लिए मानवीय मल्यों को भी मूल जाता है। यह स्थिति 'पाजेब' कहानी में आशुतोष के पिता द्वारा प्रकाश को पतंगवाले के पास भेजने और जरूरत पड़ने पर सख्ती करने व मुरव्वत न दिखाने की बात से जाहिर होता है। मध्यवर्ग शिक्षित होने के बाद भी स्त्रियों को नीचा दिखाने से बाज नहीं आता। मुन्नी की बुआ से बात करते समय मुन्नी के पिता का यह कहना कि मुहल्ले की राजनीति का भार स्त्रियों पर होता है और वे एक-दूसरे की चुगली करती है।

कुल मिलाकर जैनेन्द्र ने बाल मनोविज्ञान के साथ मध्यवर्ग को उसकी सभी विशेषताओं के साथ कहानी में उभारा है।

प्रश्न 5. 'भोलाराम का जीव' के आधार पर रचनाकार की व्यंग्यधर्मिता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-186, प्रश्न 6

प्रश्न 6. 'रोज' कहानी का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-173, प्रश्न 10

प्रश्न 7. 'पुरस्कार' कहानी की शिल्पगत विशेषताएं बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-163, प्रश्न 5

प्रश्न 8. 'पिता' कहानी में अभिव्यक्त सामाजिक यथार्थ की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-206, प्रश्न 3

प्रश्न 9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियां लिखिए–

(क) 'यह अंत नहीं' में अभिव्यक्त पंचायत राज

उत्तर–भारतीय समाज में सवर्ण जाति के लोग सम्पन्न है। उनके हाथ में सत्ता है। जाति अहं के मिथ्या दंभ से आक्रान्त है। दलितों को अस्पृश्य तथा गुलाम मानकर उनके साथ दासों का सा व्यवहार करते हैं। आर्थिक दृष्टि से दुर्बल, अशिक्षित, हीन भावना से ग्रस्त दलित जातियों के लोग बेबस, बेसहारा है अतः पशुओं या गुलामों की सी जिन्दगी जीने के लिए बाध्य है। स्वतंत्रता के साठ

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

NEERAJ®

M.H.D.-3
उपन्यास एवं कहानी

'गोदान'

❑ *प्रेमचन्द*

1

● गोदान में प्रस्तुत समस्याएं, ● गोदान : यथार्थ और आदर्श ● गोदान : युग का प्रतिबिम्ब एवं आने वाले युग की प्रसव-पीड़ा, ● गोदान : ग्राम जीवन और कणषि संस्कणति का महाकाव्य, ● गोदान : भारतीय किसान के जीवन की त्रासदी, ● गोदान का वस्तु-विधान, ● गोदान : पात्र-परिकल्पना एवं चरित्र-चित्रण कला, ● होरी : भारतीय किसान का जीवन्त प्रतिरूप, ● धनिया : निर्भीक, साहसी और पतिपरायणा पत्नी, ● गोबर : नई पीढ़ी का विद्रोही युवक, ● रायसाहब अमर पाल सिंह – व्यवहारकुशल ज़मींदार, ● मालती : बाहर से तितली, भीतर से मधुमक्खी, ● गोदान में जनतांत्रिक दणष्टि, ● गोदान : नारी भावना, गोदान में गाय की भूमिका, ● गोदान : भाषा-शैली।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. 'गोदान' में प्रस्तुत विभिन्न समस्याओं का उल्लेख करते हुए बताइये कि उसकी प्रमुख समस्या क्या है तथा उसके लिए कौन उत्तरदायी है तथा क्या संबंध है ?

उत्तर–सभी आलोचकों ने प्रेमचन्द को मूलतः सामाजिक जीवन का कथाकार कहा है । उनके सभी उपन्यासों में ग्रामीण जीवन तथा ग्रामवासियों विशेषतः किसानों की समस्याओं पर सहानुभूतिपूर्वक विचार किया गया है । अतः उन्हें ग्रामीण जीवन तथा कृषि संस्कृति का कथाकार भी कहा गया है । अपनी पुस्तक ***'समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचंद'*** में डॉ. महेन्द्र भटनागर लिखते हैं, *"प्रेमचन्द के प्रायः सभी उपन्यास सामाजिक हैं, पर उनकी सामाजिकता किसी न किसी समस्या पर ही आधारित है । प्रेमचंद का कोई भी उपन्यास ऐसा नहीं है, जिसमें किसी समस्या को न उठाया गया हो। वस्तुतः वे समस्यामूलक उपन्यासकार ही थे ।"*

'गोदान' को भी ग्राम जीवन तथा कृषि संस्कृति का महाकाव्य, भारतीय किसान के संघर्ष की गाथा तथा उसकी त्रासदी कहा गया है। अतः उसमें ग्राम-जीवन से सम्बद्ध अनेक समस्याएं हैं । 'गोदान' की आधिकारिक कथा तो होरी तथा उसके परिवार से सम्बद्ध होने के कारण ग्राम जीवन से जुड़ी है, पर उसकी प्रासंगिक कथा का संबंध नगर में रहने वाले पात्रों – रायसहब, मालती, मेहता, खन्ना आदि तथा उनकी समस्याओं से है । अतः 'गोदान' में चित्रित समस्याओं पर हम तीन दृष्टियों से विचार कर सकते हैं – 1. स्थान की दृष्टि से, 2. विषय की दृष्टि से, तथा 3. समस्या के लिए उत्तरदायी व्यक्तियों या संस्थाओं की दृष्टि से । ग्राम तथा नगर की कुछ समस्याएं विषय की दृष्टि से समान हैं, जैसे ऋण की समस्या, शोषण की समस्या, प्रेम और विवाह की समस्या आदि । अतः हम पहली और दूसरी दृष्टि मिलाकर 'गोदान' में प्रस्तुत समस्याओं पर विचार कर रहे हैं । विषय की दृष्टि से 'गोदान' में चित्रित समस्याओं को तीन वर्गों में रखा जा सकता है–

(क) सामाजिक समस्याएं,
(ख) धर्म, परम्परागत विश्वासों, जीवन-मूल्यों, रूढ़ियों, अंधविश्वासों के कारण उत्पन्न समस्याएं, तथा
(ग) आर्थिक समस्याएं ।

सामाजिक समस्याएं

1. नारी की समस्या–गांव के लोग परम्परा-प्रेमी हैं तथा प्राचीन जीवन-मूल्यों, विश्वासों, रूढ़ियों से चिपके हुए हैं । अतः नारी के प्रति उनका दृष्टिकोण वही है, जो पुरुष-प्रधान समाज का रहा है । वे नारी को अपना ज़रखरीद गुलाम समझते हैं, उसे उस गाय की तरह मानते हैं, जिसे किसी भी खूंटे से उसकी इच्छा के विरुद्ध भी बांधा जा सकता है । होरी, धनिया जैसी उग्र स्वभाव तथा निर्भय स्त्री को भी दबाकर

www.neerajbooks.com

रखना चाहता है । भोला अधेड़ होकर भी नवयुवती से दूसरा विवाह करके उसको दासी की तरह रखना चाहता है । बड़ी जाति का मातादीन चमार जाति की स्त्री सिलिया से यौन-संबंध होते हुए भी उसे पत्नी नहीं बनाना चाहता, केवल रखैल के रूप में रखना चाहता है । सोना का पति मथुरा विवाहित और घर में सुंदर पत्नी होते हुए भी सिलिया पर डोरे डालता है । उधर नगर में खन्ना पत्नी होते हुए भी मालती के चक्कर में फंसा हुआ है और गोबिन्दी के साथ उसका व्यवहार उपेक्षा, उदासीनता तथा क्रूरता का है । मीनाक्षी का पति शराबी, वेश्यागामी तथा विलासी है । अतः वह भी मीनाक्षी के साथ पति का धर्म नहीं निभाता । इस प्रकार प्रेमचंद ने नारी की दयनीय स्थिति का चित्रण करके नारी-जीवन की समस्याओं पर प्रकाश डाला है । प्रेमचंद की विशेषता यह है कि उन्होंने धनिया, मीनाक्षी जैसी उग्र स्वभाव वाली स्त्रियों का चित्रण करके तथा 'वीमेन्स लीग' जैसी संस्था की स्थापना करके और वहां होने वाले कार्यक्रमों का परिचय देकर यह स्पष्ट संकेत दिया है कि नारी जाति में अपने अधिकारों के प्रति बोध जागृत हो रहा था, वे पुरुष के अत्याचारों को मौन रहकर चुपचाप सहने की बजाय विद्रोह करने लगी थीं ।

2. स्वच्छंद प्रेम की समस्या–आज भी अधिकांश विवाह माता-पिता के द्वारा तय किये जाते हैं और स्वच्छंद प्रेम को अच्छा नहीं समझा जाता, परन्तु युवक-युवती के बीच परस्पर आकर्षण सहज, स्वाभाविक है और वे चाहते हैं कि उनका प्रथम प्रेम विवाह में परिणत हो । 'गोदान' में इस स्वच्छंद प्रेम की परिणति दो प्रकार से दिखायी गयी है – स्वच्छंद प्रेम की परिणति विवाह में । झुनिया विधवा है, दूसरी जाति की है पर गोबर प्रथम दृष्टि में ही उसे प्रेम करने लगता है । दोनों के बीच यौन-संबंध भी हो जाता है । गोबर गांव वालों, गांव की पंचायत और माता-पिता सबसे डरता है । उसे आशंका है कि उनके विवाह को कोई स्वीकार नहीं करेगा, फिर भी वह साहसपूर्वक झुनिया को घर ले आता है । धनिया की उदारता के कारण दोनों का विवाह हो जाता है परन्तु गांव वाले, गांव की पंचायत उसे स्वीकार नहीं करते और होरी को दंड स्वरूप अपने घर में रखा सारा अनाज तथा नकद तीस रुपये देने पड़ते हैं और उन रुपयों के लिए अपना घर तक गिरवी रखना पड़ता है ।

गांव में स्वच्छंद प्रेम का दूसरा उदाहरण है – मातादीन-सिलिया प्रसंग । मातादीन ब्राह्मण है, सिलिया चमारिन है । दोनों के बीच परस्पर आकर्षण के बाद यौन-संबंध स्थापित हो जाता है । यहां भी जाति का भय है । मातादीन उतना साहसी नहीं है, जितना गोबर । अतः वह सिलिया से विवाह करने को तैयार नहीं होता । गांव के नवयुवकों द्वारा विवश किये जाने पर, उसके मुंह में हड्डी डालकर उसे चमार बनाने के दुस्साहस के बाद ही वह सिलिया को पत्नी के रूप में अपनाता है । इस प्रसंग द्वारा लेखक गांव में अभिजात्य कहे जाने वाले लोगों, पंचों की भेदभावपूर्ण नीति तथा आचरण पर भी कटाक्ष करता है । जहां गोबर तथा होरी गरीब होने के कारण झुनिया को घर की बहू बनाने के लिए दंड पाते हैं, वहीं मातादीन और उसके पिता दातादीन से कोई कुछ नहीं कहता । उसके सौ खून भी माफ कर दिये जाते हैं ।

नगर में स्वच्छंद प्रेम के उदाहरण हैं – सरोज तथा रायसाहब के बेटे रुद्रपाल का प्रणय-संबंध, मालती-मेहता का परस्पर प्रेम । रुद्रपाल पिता के तर्क-वितर्क, लाभ-हानि की बातों पर ध्यान न देकर सरोज से विवाह करने के दृढ़ संकल्प पर डटा रहता है । मालती-मेहता के मार्ग में कोई बाधा नहीं है, फिर भी प्रेमचंद की आदर्शवादिता उन्हें विवाह-बंधन में नहीं बंधने देती । मेहता के आलिंगनपाश का सुख भोग कर, उनकी घर-गृहस्थी का सारा बोझ संभालने के बाद भी वह विवाह नहीं करती । स्वच्छंद प्रेम से ही जुड़ी है–अनैतिक यौन-संबंधों की समस्या। पर लेखक ने उनके दुष्परिणामों की ओर संकेत नहीं किया है ।

3. विवाह-संबंधी समस्याएं–विवाह-संबंधी जिन समस्याओं का चित्रण 'गोदान' में हुआ है वे हैं – (क) दहेज के कारण विवाह होने में बाधा, (ख) बाल-विवाह तथा विधवा की समस्या, (ग) अनमेल विवाह या वृद्ध विवाह । होरी की बड़ी बेटी सोना के विवाह में दहेज बाधा बनता है, परन्तु मथुरा का सोना के प्रति प्रबल आकर्षण, सोना का साहस और स्पष्ट ऐलान कि दहेज की मांग पर अड़े रहने के कारण वह विवाह नहीं करेगी, इस बाधा को समाप्त कर देता है । छोटी बेटी रूपा का विवाह भी दहेज न दे सकने के कारण अधेड़ उम्र के रामसेवक से करना पड़ता है, जो रूपा के पिता की उम्र का है । झुनिया बाल-विधवा है, अतः उसे सारी उम्र अकेले, अपनी इच्छाओं का दमन करते हुए ही काटनी है । गोबर द्वारा अपनाये जाने पर भी पंचायत और गांव के लोग विरोध करते हैं । स्पष्ट है कि विधवा को समाज की रूढ़ियों तथा अनीति के कारण अपना जीवन शारीरिक तथा मानसिक कष्टों के बीच बिताना पड़ा ।

4. पारिवारिक विघटन की समस्या–जीवन-मूल्यों में परिवर्तन तथा आर्थिक दबावों के कारण सम्मिलित परिवार टूटने लगे थे । प्रेमचंद ने स्वयं अपने परिवार में सास-बहू के झगड़े देखे थे; उनकी सौतेली मां की कभी उनकी पत्नी से नहीं बनी । विमाता के पुत्रों, अपने सौतेले भाइयों के लिए सब-कुछ करने के बाद भी उन्हें बदले में मिले – केवल उपेक्षा, अनादर तथा ईर्ष्या के भाव । अपनी एक कहानी 'अर्लग्यौझा' में भी उन्होंने टूटते हुए परिवार की कहानी कही है, पर वहां उन पर आदर्शवाद हावी है । 'गोदान' में उनकी दृष्टि यथार्थवादी है । अतः पहले उन्होंने होरी तथा उसके दो भाइयों – हीरा तथा शोभा को उससे अलग होते दिखाया है और बाद में पिता-पुत्र होरी तथा गोबर के बीच विचार-वैषम्य के कारण जो दरार पड़ती है, वह बढ़ती जाती है और गोबर अपनी पत्नी झुनिया के साथ गांव छोड़कर शहर चला जाता है, वहां मजदूरी करता है और अपनी बहिन की शादी के अवसर पर भी गांव नहीं लौटता ।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

नगर में रायसाहब तथा उनके बेटे रुद्रपाल में मतभेद हैं । सरोज को लेकर बाप-बेटे के संबंधों में दरार पड़ जाती है । बेटी मीनाक्षी पिता के लाख समझाने पर भी अपने वेश्यागामी-शराबी पति से समझौता करने को तैयार नहीं होती । उधर खन्ना तथा उसकी पत्नी गोविन्दी के बीच भी न परस्पर स्नेह है और न दायित्व-निर्वाह की भावना । इन चित्रों के द्वारा लेखक ने सम्मिलित परिवारों के टूटने-बिखरने तथा दाम्पत्य जीवन में कटुता आने की समस्या की ओर संकेत किया है ।

5. प्रदर्शनप्रियता की समस्या या थोथी मर्यादा की समस्या–गांव में होरी अपनी मिथ्या प्रतिष्ठा के लिए ही द्वार पर गाय बांधना चाहता है । मेहतो कहलाने के लालच में गोबर के लाख समझाने पर भी खेती छोड़कर मजदूरी करने को तैयार नहीं होता । धनिया मथुरा के घरवालों के मना करने पर भी दहेज में अपनी सामर्थ्य के बाहर सामान देती है और परिवार कर्ज़ में डूब जाता है । जाति से बहिष्कृत न हों । इसलिए होरी डांड भरता है, जिसके कारण वह कर्ज़ में डूबता जाता है और अंत में उसके पास न गाय होती है, न बैल और न खेती करने के लिए खेत ।

उधर नगर में रायसाहब अपनी मिथ्या साख को बनाये रखने के लिए कभी इलैक्शन लड़ने तथा कभी पुत्रियों के विवाह के लिए ऋण लेते हैं और दिन-पर-दिन कर्ज़ में डूबकर अपना सुख-चैन, मानसिक शांति गंवा बैठते हैं ।

6. अंधविश्वास, रूढ़ि-पालन, परम्परागत आस्था-विश्वास के कारण उत्पन्न समस्याएं–गांव के लोग परम्परा-प्रिय, रूढ़ियों में जकड़े, धर्म-भीरु तथा लकीर के फकीर होते हैं । नगर के लोग विशेषतः धनवान तथा अभिजात्य वर्ग के लोग इन रूढ़ियों से मुक्त होते हैं । अतः 'गोदान' के लेखक ने इन समस्याओं का अंकन गांव के संदर्भ में ही किया है । अपने इन अंधविश्वासों, परम्परागत जीवन-मूल्यों, रूढ़ियों के कारण ही होरी अनेक कष्ट उठाता है । यदि वह इनसे मुक्त होता या गोबर का कहना मानकर इनके पचड़े में न पड़ता, तो कदाचित् उसका जीवन इतना यातनापूर्ण न होता । गऊ की हत्या होने पर प्रायश्चित करना चाहिए । जाति से बहिष्कृत न होने के लिए शक्ति से बाहर ऋण लेकर भी पंचों को प्रसन्न रखना चाहिए । घर की इज्जत बचाने के लिए घर की तलाशी नहीं होने देनी चाहिए, भले ही रिश्वत देनी पड़े । यह जानते हुए भी कि ऋणदाता धूर्त है, बेईमान है, ब्याज के रूप में मूल का तिगुना वसूल कर चुका है, रसीद नहीं देता और वसूल हुई धनराशि को दुबारा मांग रहा है, होरी दातादीन, नोखेराम की पाई-पाई चुकाने पर बल देता है, क्योंकि वह धर्मभीरु है, उसका विश्वास है कि ब्राह्मण की एक-एक पाई चुकानी चाहिए, वरना शरीर में कोढ़ फूट पड़ता है । अपनी मान्यताओं के कारण ही वह गांठ में पैसा न रहते हुए भी सत्यनारायण की कथा की थाली में पैसे डालता है । तीर्थ-यात्रा से लौटने पर गांव वालों को प्रसाद बांटता है । धनिया पति की मृत्यु के समय गोदान के बदले दिन-रात सुतली बंटकर कमाये हुए बीस आने दातादीन को दान में देती है । ईश्वरीय न्याय में विश्वास, ईश्वर जो करता है ठीक ही करता है, ईश्वर ही बड़े-छोटे, अमीर-गरीब बनाकर भेजता है, पिछले जन्मों के कर्मों का फल इस जीवन में भोगना पड़ता है, भाग्य के लिखे को कोई नहीं मिटा सकता – ये अंधविश्वास ही होरी को यातना की भट्टी में झोंक देते हैं और उसे यमराज के हाथों में ढकेल देते हैं । इस प्रकार होरी के कष्टों का एक कारण उसकी धर्मभीरुता, रूढ़िवादिता तथा झूठी-थोथी मर्यादा बनाये रखने की हठवादिता भी है ।

आर्थिक समस्याएं

(क) शोषण तथा ऋण की समस्या–'गोदान' 1936 में प्रकाशित हुआ था । 1936 तक प्रेमचंद जीवन भर संघर्ष करते रहे थे और जैनेन्द्र को लिखे पत्र से स्पष्ट होता है कि वह आर्थिक कठिनाइयों से जूझते-जूझते तथा एड़ी-चोटी का पसीना बहाकर भी उन कठिनाइयों पर विजय पाने में असमर्थ रहे थे अतः शरीर और मन दोनों से हार गये थे । इसी समय वह मार्क्सवादी विचारधारा से परिचित हुए और उन्हें मार्क्स के सिद्धांतों में पर्याप्त सच्चाई दिखी । मार्क्स मानता है कि समाज में केवल दो वर्ग हैं – साधनसम्पन्न तथा साधनहीन, बुर्जुआ तथा सर्वहारा, शोषक और शोषित । साधनसम्पन्न साधनहीन वर्ग की विवशता तथा असहायता का लाभ उठाकर उसका शोषण करता है और सर्वहारा वर्ग जीवनभर कड़ी मेहनत तथा रात-दिन कोल्हू के बैल की तरह जुता रहकर भी दो वक्त भरपेट भोजन नहीं कर पाता। अतः सारी मुसीबतों की जड़ें वैषम्य है । अपने लेख 'महाजनी सभ्यता' में प्रेमचन्द स्पष्ट लिखते हैं–

"धन-लोभ ने मानव भावों को पूर्ण रूप से अपने अधीन कर लिया है । कुलीनता और शराफत, गुण और कमाल की कसौटी पैसा और केवल पैसा है, वह देवता स्वरूप है, उसका अंतःकरण कितना ही काला क्यों न हो, साहित्य, संगीत, कला सभी धन की देहली पर माथा टेकने वालों में से हैं ।.....इस पैसे ने आदमी के दिलो-दिमाग पर इतना कब्ज़ा जमा लिया है कि उसके राज्य पर किसी ओर से आक्रमण करना कठिन दिखाई देता है । वह दया, स्नेह, सौजन्य और सच्चाई का पुतला मनुष्य, दया-ममता-शून्य, जड़-यंत्र बन कर रह गया है । इस महाजनी सभ्यता ने नये-नये नियम गढ़ लिए हैं । उनमें से एक यह है कि समय ही धन है। ..... इस सभ्यता का दूसरा सिद्धांत व्यवसाय है, उसमें भावुकता के लिए गुंजाइश नहीं ।"

'गोदान' में जिस समस्या का सर्वाधिक विशद्, जीवंत, मार्मिक और विश्वसनीय चित्रण किया गया है वह है आर्थिक समस्या-शोषण तथा ऋण की समस्या । शोषक वर्ग सामान्य-जन का इतना अधिक शोषण करता है कि उसकी क्रय-शक्ति समाप्त हो जाती है, उसे पेट भरने, शादी-ब्याह करने, लगान चुकाने तक को महाजनों से ऋण लेना

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

पड़ता है और पूंजीवादी-सामंती-महाजनी व्यवस्था में ऋण एक ऐसा मेहमान है, जो एक बार आकर फिर जाने का नाम ही नहीं लेता । 'गोदान' में शोषण करने वालों की भीड़ जमा है । ज़मींदार किसानों का शोषण करता है, महाजन ऋण लेने वालों का तथा उद्योगपति, मिल-मालिक मिल में काम करने वाले मजदूरों का । 'गोदान' में रायसाहब किसानों से बेगार लेते हैं, लगान वसूल करने में कोई रियायत नहीं करते, समय पर लगान न चुकाने वाले को बेदखली की धमकी देते हैं। इतना ही नहीं, अपने को सुर्खरू करने, सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ाने, स्वयं को भारतीय संस्कृति का पुजारी एवं धार्मिक वृत्ति का व्यक्ति दिखाने के लिए रामलीला का आयोजन करते हैं, पर उसके लिए जो धन राशि चाहिए, वह किसानों से वसूल करते हैं – प्रति हल चंदा देने की बात कहते हैं ।

गांव में साहूकार एक नहीं, अनेक हैं । होरी के गांव में झिंगुरी सिंह है, पटवारी है, नोखेराम कारिन्दा है, दुलारी सहुआइन भी है । यहां तक कि धर्माचार्य पंडित दातादीन भी ब्याज पर ऋण देता है । ये सब ऊंची ब्याज-दर पर ऋण देते हैं, समय पर कागज़ नहीं लिखाते, नतीजा यह होता है कि मूल से तिगुना वसूल करते हैं । ऋण देते समय किसी न किसी बहाने पूरी रकम भी नहीं देते । तीस रुपये का कागज लिखाते हैं, पर ऋण लेने वाले के हाथ में पच्चीस रुपये ही पकड़ाते हैं । ऋण का भुगतान करने पर या लगान की पूरी रकम चुकाने पर कभी-कभी रसीद भी नहीं देते; ऋण लेने वाले की अशिक्षा, भोलेपन तथा विश्वास करने की प्रवृत्ति का लाभ उठाकर चुकायी गयी रकम को दुबारा वसूल करने का प्रयास करते हैं । नोखेराम होरी के साथ यही करता है, पर गोबर की वजह से उसकी चाल नहीं चल पाती ।

ज़मींदार तथा महाजनों के अतिरिक्त गांव के भोले-भाले, अनपढ़ किसानों को पुलिस भी सताती है, मौका मिलते ही गांव में आ धमकती है तथा डरा-धमका कर, झूठे इल्ज़ाम लगाकर रिश्वत लेती है। गो-हत्या का समाचार सुनकर थानेदार गांव में आ धमकता है तथा होरी की दुर्बलता को पहचान कर रिश्वत मांगता है । गांव के प्रतिष्ठित कहे जाने वाले लोग होरी की बजाय थानेदार का साथ देते हैं और होरी को विवश करते हैं कि वह रिश्वत दे । इतना ही नहीं, वे रिश्वत के लिए रुपये उधार देने को भी तैयार हो जाते हैं, क्योंकि रिश्वत के रुपयों में से उनको भी अपना हिस्सा मिलता है । धर्म के नाम पर पंडित दातादीन होरी का शोषण करता है और यह धर्मभीरु किसान शोषण-चक्र में फंस कर अपना सब-कुछ खेत, घर, बैल सब गंवा बैठता है और विडम्बना यह है कि होरी की मरणासन्न अवस्था में यही धूर्त पंडित गोदान लेने के लिए पहुंच जाता है और धनिया के खून-पसीने की कमाई बीस आना भी लेने में संकोच नहीं करता ।

ऋण की समस्या गांवों में ही नहीं, नगरों में भी है । रायसाहब को इलैक्शन लड़ने, बेटियों के विवाह के लिए ऋण लेना पड़ता है, तो मिल-मालिक खन्ना भी बैंक का ऋणी है । यही उद्योगपति खन्ना अपनी मिल के मजदूरों का शोषण करता है, उन्हें उचित वेतन नहीं देता, जिसके कारण पहले हड़ताल होती है और फिर मिल आग की लपटों में जलकर राख हो जाती है ।

इस प्रकार 'गोदान' में शोषण तथा ऋण की समस्या को अनेक कोणों से प्रस्तुत किया गया है । इस समस्या को लेखक ने विस्तार से तो प्रस्तुत किया ही है, उसके चित्रण में लेखक की सहानुभूति कृषक-वर्ग के साथ रही है, क्योंकि उसकी स्थिति बड़ी करुणोत्पादक, मार्मिक तथा दयनीय है । ऋण की समस्या के मूल कारण भी यथार्थवादी दृष्टि से अंकित किये गये हैं ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि गोदान में अनेक सामाजिक, धर्म-संबंधी तथा आर्थिक समस्याओं का चित्रण किया गया है, पर मुख्य समस्या आर्थिक ही है – शोषण तथा ऋण की समस्या । प्रेमचन्द इस त्रासदी के लिए उत्तरदायी मानते हैं व्यवस्था को । महाजनी, सामंती, पूंजीवादी कोई भी नाम दें, यह व्यवस्था ही सारे कष्टों, अन्याय, अत्याचार और अनीति का कारण है। इसी व्यवस्था-दोष के कारण किसान कष्ट पाते हैं तथा नगरों के ऊपर से सुखी दिखने वाले रायसाहब तथा खन्ना जैसे लोग भी भीतर ही भीतर परेशान, चिंतामग्न तथा उद्विग्न रहते हैं । उन्हें रात में नींद नहीं आती और दिन में उधेड़-बुन में लगे रहते हैं । होरी ईमानदार, भोला, परिश्रमी, स्नेहिल होते हुए भी असमय काल का ग्रास बनता है । उसकी सज्जनता तथा ईमानदारी ही उसके लिए प्राणघातक सिद्ध होती है । गोबर का विद्रोह, उसके व्यंग्य, कटाक्ष तथा उसकी कटु टिप्पणियां भी व्यवस्था के प्रति उसके क्षोभ और आक्रोश का परिणाम हैं ।

प्रश्न 2. *''अपने अंतिम उपन्यास 'गोदान' में भी प्रेचन्द अपनी आदर्शवादी दृष्टि का परित्याग नहीं कर पाये हैं।"* इस उक्ति के आलोक में 'गोदान' के यथार्थवाद पर विचार कीजिए।

उत्तर–प्रेमचन्द के विषय में सबसे अधिक विवादास्पद प्रश्न यदि कोई है तो यह कि वह यथार्थवादी थे, आदर्शवादी थे अथवा आदर्शोन्मुख यथार्थवादी लेखक थे । इसका कारण यह है कि जहां समाजवादी आलोचकों ने उन्हें यथार्थवादी कहा है, आचार्य नंददुलारे वाजपेयी और डॉ. नगेन्द्र ने आदर्शवादी, वहां प्रेमचन्द ने स्वयं अपने-आपको आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहा है । हम पहले इन विद्वानों के मतों का उल्लेख करके उनका विवेचन करेंगे और तदुपरांत अपना निष्कर्ष प्रस्तुत करेंगे । समाजवादी आलोचकों ने उनके उपन्यासों में जन-जीवन के यथार्थ चित्र, समाज के सर्वहारा वर्ग – किसान, मजदूर और नारी – के शोषण और उत्पीड़न का सहानुभूतिपूर्ण वर्णन और शोषकों तथा उत्पीड़ितों के प्रति कहीं व्यक्त और कहीं प्रच्छन्न घृणा-भाव देख उन्हें यथार्थवादी उपन्यासकार कहा है और अपने राजनीतिक मतवाद के कारण उन्हें वह श्रेय प्रदान किया है, जिसके वह कदाचित् पूर्ण अधिकारी भी नहीं हैं । रूसी आलोचक ब्रेस्क्रोहनी इसी पूर्वाग्रह के

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com